परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके वर्ष १९९२ में आयोजित अभ्यासवर्ग

विषयसूची

- ग्रन्थोंके संकलनकर्ताओंका परिचय ६
- परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीके अध्यात्मसम्बन्धी अभ्यासवर्ग : साधनासे सम्बन्धित चैतन्यमय मार्गदर्शन करनेवाला दीपस्तम्भ ! १२
- परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी द्वारा व्यक्त की हुई कृतज्ञता ! १७

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' इस चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

- **परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी के वर्ष १९९२ में आयोजित अभ्यासवर्ग** १८

अध्याय १ : प.पू. डॉ. आठवलेजीके अभ्यासवर्गोंका प्रारम्भ, स्वरूप एवं साधकोंको सीखनेके लिए मिले सूत्र २०

* वर्ष १९९१ से वर्ष १९९४ तक प.पू. डॉक्टरजीका अभ्यासवर्ग लेनेके लिए मुंबईसे गोवा आना २०
* अध्यात्मप्रसारका कार्य बढानेके लिए प्रारम्भमें प.पू. डॉक्टरजीद्वारा अध्यात्म सम्बन्धी अभ्यासवर्ग लेना २१
* सन्तोंसे मिलनेके लिए साधकोंको साथ ले जाना तथा 'सन्तोंके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए ?', यह सिखाना २७
* सभी साधकोंमें कुटुम्बभावना निर्माण करना २९

अध्याय २ : सावंतवाडीमें सम्पन्न अभ्यासवर्ग (८.५.१९९२) ३४

* नामजप करते समय मनकी शान्ति भंग होनेका कारण ३४
* तीन बार स्वप्नदृष्टान्त होनेपर, उसे खरा समझें ! ३६
* सन्तोंके दर्शनके लिए जानेका महत्त्व ! ३७

अध्याय ३ : मिनेजिस ब्रागांझा हॉल, पणजी में सम्पन्न अभ्यासवर्ग (१०.५.१९९२) ४०

* किसी धार्मिक विधिके लिए विधि करनेवालेमें आवश्यक घटकोंकी मात्रा ४०
* सन्त आणि ज्योतिषी ४१
* प.पू. भक्तराज महाराजजीद्वारा गाली देनेका कारण ४३
* गुरुसेवासे 'अहं' अल्प होना ४४
* श्री साईबाबाने बोलते-बोलते एकाएक अपना हाथ आगमें डालनेका कारण ४५

अध्याय ४ : मिनेजिस ब्रागांजा हॉल, पणजी में सम्पन्न अभ्यासवर्ग (७.६.१९९२) ४६

* आध्यात्मिक स्तरानुसार साधनाकी कृति एवं होनेवाला त्याग ४६
* अनुभूतिमें न अटकते हुए अगले चरणमें जाना आवश्यक ४६
* तन, मन एवं धन का त्याग ४९
* मनुष्यजन्म मिलनेके कारण एवं उनकी मात्रा ५०
* सन्तोंके नामका जप एवं भगवानका नामजप ५०
* स्वेच्छा, परेच्छा एवं ईश्वरेच्छा के अनुसार त्रिगुणमें प्रधान गुण एवं अहंभावकी मात्रा ५२

अध्याय ५ : सावंतवाडीमें सम्पन्न अभ्यासवर्ग (२७.९.१९९२) ५७

* सुख एवं शान्ति के सन्दर्भमें 'मैं' (अहं) ५९
* भूलोक एवं भुवर्लोक ५९
* काशीसे लौटनेपर सन्तोंको प्रसाद देना अथवा न देना ६५
* उच्च देवता एवं क्षुद्रदेवता * मनकी दो अवस्थाएं ६५
* सन्त किसके घर नहीं जाते ? ६६

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीके अध्यात्मसम्बन्धी अभ्यासवर्ग : साधनासे सम्बन्धित चैतन्यमय मार्गदर्शन करनेवाला दीपस्तम्भ !

१. अध्यात्मके अध्ययनका महत्त्व : 'पंचज्ञानेन्द्रिय (आंखें, कान, नाक, जीभ एवं त्वचा), मन एवं बुद्धि द्वारा जो अच्छा लगता है, वह सुख है, उदा. 'आइसक्रीम' खाना, परीक्षामें प्रथम क्रमांक आना । ऐसे सुख तात्कालिक एवं निकृष्ट स्तरके होते हैं । खरा सुख है, आत्मसुख अर्थात आनन्द । आनन्द चिरन्तन एवं सर्वोच्च स्तरका होता है । केवल साधनाके कारण ही हम आनन्द अनुभव कर सकते हैं । साधना भलीभांति होनेके लिए अध्यात्म समझना आवश्यक होता है । इसका कारण है कि अध्यात्मके अध्ययनसे साधना करनेका महत्त्व मनपर अंकित होता है । साधनासे सम्बन्धित विविध क्रियाओंका शास्त्र पता चलनेके कारण साधनापर श्रद्धा बढती है तथा साधनामें उन्नतिके अगले चरण प्राप्त करनेके मार्ग भी पता चलते हैं ।

२. प्रवचन एवं सत्संग की तुलनामें अभ्यासवर्गोंका महत्त्व

२ अ. प्रवचन : प्रवचनमें प्रवचन देनेवाले बोलते हैं । तब उनका यह विचार नहीं होता कि श्रोता विषय समझ पाए हैं कि नहीं ।

२ आ. सत्संग : श्रोता विषय समझ पाए हैं कि नहीं, इस ओर सत्संग लेनेवालोंका थोडा ध्यान रहता है । सत्संगमें सत्संग लेनेवाले बोलते हैं और अन्य सब सुनते रहते हैं ।

२ इ. अभ्यासवर्ग : अभ्यासवर्गमें प्रमुखतासे प्रश्न पूछे जाते हैं तथा अभ्यासवर्ग लेनेवाला प्रश्नोंके उत्तर देता है; इसलिए अभ्यासवर्गोंका महत्त्व अधिक है । अभ्यासवर्ग लेनेवालेका, 'श्रोता विषय समझ पा रहे हैं कि नहीं', इस ओर ध्यान रहता है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने विविध स्थानोंपर अभ्यासवर्ग लेकर समाजके जिज्ञासुओंकी शंकाओंका समाधान

किया है । इसलिए अभ्यासवर्गमें आनेवाले अनेक जिज्ञासुओंकी साधना बढी है और अब वे साधनाके अगले चरणमें पहुंच गए हैं ।

३. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा लिए अभ्यासवर्गोंका काल : परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने उनके मुंबई स्थित चिकित्सालयमें शनिवार, १७.५.१९८६ एवं रविवार, १८.५.१९८६ को 'अध्यात्म' विषयपर पहला अभ्यासवर्ग लिया । वर्ष १९८७ से वर्ष १९९४ के बीच उन्होंने अन्यत्र जाकर वहांके देवालय, सभागृह आदि स्थानोंपर अभ्यासवर्ग लिए ।

४. अभ्यासवर्गोंका स्वरूप : परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी अभ्यासवर्गमें कुलदेवीका नामजप, सन्तों द्वारा बताया गया नामजप, नामजपमें उन्नतिके चरण, सन्तसान्निध्य एवं गुरु-आज्ञापालनका महत्त्व, विविध योगमार्ग (उदा. भक्तियोग, ज्ञानयोग, गुरुकृपायोग), साधना करनेका महत्त्व आदि विषयोंका विवेचन करते थे । अभ्यासवर्गोंमें साधनासम्बन्धी प्रश्नोत्तर होते थे तथा सूक्ष्म प्रयोग भी करवाए जाते थे ।

५. अभ्यासवर्ग लेनेके विषयमें ध्यानमें आई परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी विशेषताएं

५ अ. निःशुल्क अभ्यासवर्ग लेना : 'ज्ञानदानका पवित्र कर्म निःशुल्क करना चाहिए', यह हिन्दू संस्कृति की सीख है । प्राचीन कालमें 'गुरुकुल शिक्षाप्रणाली' ऐसी ही थी । परात्पर गुरु डॉक्टरजी भी अभ्यासवर्ग निःशुल्क लेते थे ।

५ आ. स्वयंका समय और पैसा व्यय (खर्च) कर दूर-दूर के स्थानोंपर जाकर अभ्यासवर्ग लेना : परात्पर गुरु डॉक्टरजी स्वयंका चिकित्सालय सम्भालकर प्रथम मुंबईमें और उसके उपरान्त मुंबईसे बाहर तथा अन्य राज्योंमें जाकर भी अभ्यासवर्ग लेते थे । ये सब करनेके लिए वे समय एवं पैसों का विचार नहीं करते थे । दूसरे गांवमें जानेपर

कभी-कभी कुछ साधकोंके घरकी स्थितिके अनुसार समायोजन कर १ - २ दिन उन्हें रहना पडता । 'अधिकाधिक जिज्ञासुओंको अध्यात्मकी शिक्षा मिले तथा उनकी साधना प्रारम्भ हो', इस लगनके कारण परात्पर गुरु डॉक्टरजी सभी यात्रा आनन्दसे करते ।

५ इ. ऋषि-मुनि और सन्तों द्वारा लिखित ग्रन्थोंके ज्ञानको सामान्य व्यक्ति सहजतासे आचरणमें ला पाए, इस पद्धतिसे बताना : कुछ स्थानोंपर अध्यात्मपर प्रवचन (व्याख्यान) आयोजित किए जाते हैं । उन प्रवचनोंमें मुख्यतः भारतके ऋषियों एवं सन्तों द्वारा लिखित गए ग्रन्थोंका (उदा. श्रीमद्भगवद्गीता, दासबोध आदि का) ज्ञान बताया जाता है । ऐसे ग्रन्थोंके ज्ञानको आचरणमें लाना सामान्य व्यक्तिके लिए थोडा कठिन होता है । परात्पर गुरु डॉक्टरजी उन ग्रन्थोंके ज्ञानका आशय, अर्थात अध्यात्म की सीख सामान्य व्यक्ति सहजतासे आचरणमें ला पाए, ऐसी पद्धतिसे अभ्यासवर्गमें बताते । इसलिए किसी भी आध्यात्मिक स्तरका साधक अध्यात्म समझ पाता ।

५ ई. अध्यात्मके सर्व विषयोंपर मार्गदर्शन करना : अभ्यासवर्गमें आनेवाले जिज्ञासुओंकी शंकाओंका समाधान करते समय परात्पर गुरु डॉक्टरजी अध्यात्मशास्त्र समझाते । इसलिए जिज्ञासुओंको ज्ञानतृप्तिका आनन्द मिलता एवं अध्यात्मपर उनकी श्रद्धा भी बढती ।

५ उ. आध्यात्मिक ग्रन्थोंका विशेष वाचन न करनेपर भी जिज्ञासुओंके किसी भी विषयसे सम्बन्धित प्रश्नोंके तत्काल उत्तर देना : परात्पर गुरु डॉक्टरजीने वेद, पुराण, दर्शन आदि धर्मग्रन्थोंका एवं ज्ञानयोग, कर्मयोग, ध्यानयोग आदि विविध साधनामार्गोंके ग्रन्थोंका अधिक अध्ययन नहीं किया था; परन्तु वे अभ्यासवर्गमें जिज्ञासुओंद्वारा पूछे गए अध्यात्मके किसी भी विषयसे सम्बन्धित प्रश्नोंके तत्काल उत्तर देते । किसीका मनोलय एवं बुद्धिलय हो चुका हो, तो उसे विश्वमन एवं विश्वबुद्धि के माध्यमसे

ज्ञान ग्रहण हो सकता है । परात्पर गुरु डॉक्टरजीके विषयमें ऐसा ही होता । इससे परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी उस समयकी उच्च आध्यात्मिक अवस्था समझमें आती है ।

५ ऊ. साधकोंके कुछ प्रश्नोंके अचूक उत्तर सूक्ष्म-स्तरीय ज्ञानके आधारपर देना : ऐसे साधकोंको परात्पर गुरु डॉक्टरजी द्वारा सूक्ष्म-स्तरीय ज्ञानके आधारपर दिए उत्तरोंके समान ही आगे वैसा ही घटित होनेकी प्रतीति होती थी । इससे उस समयकी परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी सूक्ष्म आयामसम्बन्धी असीमित क्षमता एवं उनका आध्यात्मिक अधिकार समझमें आता है ।

५ ए. परात्पर गुरु डॉक्टरजीसे निकटता होनेके कारण साधक साधना की व्यक्तिगत अडचनोंके सम्बन्धमें नि:संकोच प्रश्न पूछ सकते थे ।

५ ऐ. परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी चैतन्यमय वाणीके कारण जिज्ञासुओं के अन्त:करणपर साधनाका गहराईसे संस्कार होना : अधिकांश जिज्ञासु पहली बार अभ्यासवर्गमें आनेके उपरान्त आगे चलकर स्थायी रूपसे सनातनके साधक बन जाते थे । इसका मुख्य कारण था, परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी चैतन्यमय वाणिका प्रभाव ! उनकी चैतन्यमय वाणीके कारण जिज्ञासुओंके अन्त:करणपर साधनाका गहन संस्कार होता था । इसलिए उनका साधना करनेका निश्चय दृढ हो जाता और वे लगनसे साधना प्रारम्भ करते ।

५ ओ. अभ्यासवर्गोंमें साधकोंको अनुभूति होती थी, उदा. दैवी सुगन्ध आना, मन निर्विचार होना ।

५ औ. अभ्यासवर्ग लेनेके लिए साधकोंको भी तैयार करना : परात्पर गुरु डॉक्टरजी विविध स्थानोंपर अभ्यासवर्ग लेते, उस समय कुछ साधकों को भी अपने साथ सीखनेके लिए ले जाते थे । इन साधकोंको तथा परात्पर गुरु डॉक्टरजी जहां जाते थे, वहांके कुछ स्थानीय साधकोंको वे

अभ्यासवर्ग लेनेकी दृष्टिसे सिखाते । इसलिए आगे चलकर सनातनके अनेक साधक अभ्यासवर्ग लेनेके लिए तथा दायित्व लेकर अध्यात्मप्रसार -कार्य करनेके लिए तैयार हो गए । इसलिए अल्पावधिमें ही सनातनका धर्मप्रसारकार्य तीव्रगतिसे बढा ।

६. अभ्यासवर्गोंकी फलोत्पत्ति

६ अ. अनेक जिज्ञासु साधक बने एवं अनेक साधक पूर्णकालिक साधक बन गए ।

६ आ. अनेक साधकोंकी अध्यात्ममें अच्छी उन्नति होना : अभ्यासवर्गों में आनेवाले अनेक साधकोंने गत कुछ वर्षोंमें ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त किया है तथा कुछ साधक सन्त भी बने हैं ।

७. परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा अभ्यासवर्गमें किया मार्गदर्शन प्रस्तुत ग्रन्थमालामें विषयके अनुरूप प्रकाशित न करते हुए जैसेका वैसा प्रकाशित करनेका कारण : अनेक साधकोंको कुतुहल होता है कि 'परात्पर गुरु डॉक्टरजी पहले अभ्यासवर्गमें क्या और कैसे सिखाते थे ?' उनकी जिज्ञासा शान्त करनेके लिए अर्थात 'परात्पर गुरु डॉक्टरजीके अभ्यासवर्ग निश्चित रूपसे कैसे होते थे', यह ज्ञात होनेके लिए अभ्यासवर्गोंका मार्गदर्शन प्रस्तुत ग्रन्थमालामें विषयवार प्रस्तुत न करते हुए जैसेका वैसा प्रकाशित किया है । अभ्यासवर्गोंका विषयवार विवेचन सनातनद्वारा प्रकाशित सम्बन्धित ग्रन्थोंमें दिया है अथवा विशिष्ट विषयसे सम्बन्धित आगामी ग्रन्थोंमें दिया जाएगा ।

८. प्रार्थना : 'प्रस्तुत ग्रन्थके अध्ययनसे जिज्ञासुओं एवं साधकों को साधनाके अगले चरणकी प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन मिले एवं तदनुसार साधना कर उनकी शीघ्रातिशीघ्र आध्यात्मिक उन्नति हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !'

- (पू.) श्री. संदीप आळशी (७.१०.२०२०)